International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राजस्थानी रागमाला चित्रण परम्परा

डॉ. पवन कुमार जाँगिड़
सहायक आचार्य–चित्रकला
श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी राजकीय
स्नातकोतर महाविद्यालय, किशनगढ़ (राजस्थान)

प्रस्तावना :–

रागमाला चित्रकला रागों के वर्गीकरण की परंपरागत पद्धति है। भारतीय लघु चित्रकला में राग–रागिनी चित्रों का प्रमुख स्थान है। 17वीं व 18वीं शती के सभी प्रचलित लघुचित्र शैलियों में इस विषय को चित्रित किया गया है। स्थान और काल विशेष के आधार पर हम इसे पहाड़ी रागमाला, राजपूत या राजस्थानी रागमाला, दक्कन रागमाला व मुगल रागमाला के नाम से जानते हैं। विभिन्न रागों और उससे संबंधित मौसम यहां तक कि प्रत्येक राग के लिए निर्धारित समय के अनुसार इसका चित्रण किया गया है। समझा जाता है कि स्वर और चित्र की रेखा का उद्‌गम यूं तो मानव की प्रागैतिहासिक अवस्था में लगभग समान रूप से ही हुआ, किन्तु इसके विकास में सदियों लग गए। वैसे रागों की उत्पति किस कालक्रम से हुआ है इसको लेकर काफी मतभेद तो हैं ही राग–रागनियों की संख्या को लेकर भी कोई सर्वमान्य मान्यता नहीं रही है। 10वीं शती में अभिनव ने अभिनव भारती में छियानबे रागों का वर्णन किया है। 1127 ई० के लगभग राजा सोमेश्वर ने अभिलषितार्थ चिन्तामणि में छियानबे रागों की चर्चा की है। संगीत रत्नाकर में दो सौ चौसठ रागों की चर्चा की है। शिवमत के अनुसार छः राग और प्रत्येक की छः–छः रागिनियाँ माने जाते थे। इस मत में मान्य छः राग–1. रागभैरव 2. रागश्री 3. रागमेघ 4. रागबसंत 5. रागपंचम 6. राग नट नारायण। हनुमत के अनुसार 06 राग और 30 रागिनियों का नाम संगीत दर्पण में मिलता है। सोमेश्वर मत के अनुसार 06 राग व 36 रागिनियों का वर्गीकरण है। राग–रागिनी के वर्गीकरण का कोई निश्चित नियम नहीं है जो सभी मतों द्वारा अपनाई गयी हों। जैसे कि शिवमत में बंसत और पंचम राग है। शिव मत तथा सोमेश्वर मत मे हिंदोली रागिनी है जब कि प्रदर्शित चित्रों में हिंदोल राग है जिसका वर्णन हनुमत में मिलता है। सभी मतों में तीन राग स्थाई है – श्रीराग, भैरव राग तथा मेघ राग। सर्वमान्य रूप से रागों को छः रूपों में बांटा गया है। राग–रागिनियों का मुख्य अन्तर यह है कि राग को ऊँचे स्वर में जबकि रागिनियों को स्त्रियोचित कोमलता के अनुरूप गाया जाता है। उसी के अनुरूप दृश्य रूप में रेखाओं एवं रंगों के माध्यम से दिखाया गया है। राजस्थानी, पहाड़ी व मुगल शैलियों में इस रागमाला चित्रण को काफी लोकप्रियता मिलती चली गई। राग–रागिनियों में पुत्र और पुत्र वधुओं तक को समाहित किया जाने लगा

फलतः इसकी संख्या 72, 76, 80, 84 व 108 तक पहुंच गई। विदित हो कि आइने अकबरी में भी राग–रागिनियों का वर्गीकरण मिलता है। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि 16वीं सदी में राजस्थानी शैली में रागमाला चित्रण की प्रणाली की शुरूआत हो चुकी थी। समझा जाता है कि जिस वातावरण में प्रत्येक राग–रागिनी की प्रतीक भावना का उदय होता है, उसकी कल्पना पर राग–रागिनी को मूर्त रूप देने की चेष्टा में संगीतज्ञ कवियों ने श्लोक बनाये जिसके आधार पर चित्रकारों द्वारा रागमाला चित्रों का सृजन किया गया। इन चित्रों में राग–रागिनी को नायक नायिका के रूप में चित्रित किया गया। देखा जाए तो यह संगीत, काव्य और चित्रकला को एक साथ पिरोने या एक सूत्र में बांधने का बहुत ही सफल प्रयोग था। 17वीं व 18वीं सदी में राजस्थान में इस शैली के चित्रों की रचना काफी संख्या में की गई और इस क्रम में मेवाड़ इस अंकन के एक प्रमुख केन्द्र के तौर पर स्थापित रहा। रागमाला चित्रशैली के अलग–अलग शैलियों की बात करें तो कुछ प्रमुख शैलियां और उनकी विशेषताओं की चर्चा भी यहां आवश्यक हो जाती है। मुगल दरबार और राजस्थान के विभिन्न अंचलों के अलावा दक्षिण भारत में प्रचलित शैली की बात करें तो दक्कन रागमाला का वर्णन 1725 ई. के आसपास मिलने लगता है वैसे तो इन चित्रों पर भी राजस्थानी प्रभाव स्पष्ट तौर पर दृष्टिगत है। दक्षिण में इसके प्रमुख केन्द्र के रूप में बीजापुर, गोलकुंडा एवं अहमद नगर रहे। अन्य प्रमुख केन्द्रों की बात करें तो बूंदी, कोटा शैली, मेवाड़ शैली, मारवाड़ शैली, सिरोही व जयपुर शैली। पहाड़ी चित्रकला की बात करें तो बसोहली, कुल्लू, विलासपुर, कांगड़ा एवं टिहरी गढ़वाल आदि रियासतों में इस कला परंपरा के तहत चित्रित राग–रागिनी चित्रों का वर्णन मिलताहै।

मुख्य शब्द – रागमाला, वसली, राग–रागिनियां, संगीतकार, विधाएं, मूल राग, श्रृंगार।

मुख्य भाग –

पशुः शिशुमृगों वापी नादेन परितूष्यति ।
अतो नादास्य माहात्मयं व्याख्यातु केन शक्यते।।

संगीत उतना ही प्राचीन और अनादि है जितनी मानव जाति। वैदिक काल से पूर्व जब भाषा नहीं थी तो पारिवारिक जीवन को स्वस्थ रखने के लिए पहले की भावनाओं को अभिव्यक्त देने का संगीत एक माध्यम था।[1] संगीत प्रत्येक जीवधारी और जड़ पदार्थों में उपस्थित रहता है मानव पशु पक्षी जलस्रोत हवा वनस्पति जगत में उनकी स्वाभाविक ध्वनि से संगीत उत्पन्न होता है।[2] अतः संगीत सृष्टि के प्रारंभ से ही उपस्थित है चाहे जीवन बाद में आया हो कला

की अन्य सभी विधाओं के समान संगीत की लोक तथा शास्त्रीय धारा में बहता रहा है। लोकधारा जन मन की सहज भावनाओं को कुंवारे रूप में अभिव्यक्त करती और शास्त्रीय धारा ज्ञान एवं अध्ययन के आधार पर अपना रूप निश्चित करती है। राग वह स्वर रचना है जिसमें स्वर संवाद संबंध से परस्पर संबंध रहते हैं और रंजकता के कारण एक विशिष्ट प्रभाव श्रोता के मन पर अंकित करते हैं रंजकता राग की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।[3] रागमाला चित्र संगीत के मूर्ति स्वरूप के चित्रण है। इसमें संवेगो, भावनाओं आदि को प्रतीक रूप में चित्रित किया है जिनका स्वरूप संगीतकारों एवं कवियों ने पहले निश्चित कर दिया था यह निश्चित स्वरूप कविता के रूप में चित्र के ऊपर लिखा होता है। कई कलाकारों ने पूरी कविता न लिखकर केवल राग रागिनी का नाम ही लिख दिया है। रागमाला चित्रों के सैट में 36 चित्र होते हैं इनमें 6 मूलराग एवं प्रत्येक की 55 रागिनियां होती है। कुछ सैटो में 42 चित्र भी मिलते हैं इनमें प्रत्येक राग के छह रागनियां होती है। बाद में राग पुत्र, राग पुत्री और राग पुत्रों की पत्नियां भी चित्रित हुई है जिससे रागमाला सैट में चित्रों की संख्या बढ़ गई।

रागमाला चित्र 16वीं शताब्दी के मध्य या अंत से बने प्रारंभ हुए। 17वीं शताब्दी एवं 18वीं शताब्दी इन चित्रों के निर्माण का श्रेष्ठ समय रहा और 19वीं शताब्दी में आते–आते कार्य में गिरावट आई तथा 20वीं शताब्दी में इस परंपरा का पूर्ण ह्रास हो गया। इनके निर्माण का केंद्र राजस्थान, मध्य भारत और दक्षिणी प्रदेश में अहमदनगर, बीजापुर तथा गोलकुंडा रहा है गंगा यमुना के मैदानी क्षेत्र तथा उत्तर में पहाड़ी क्षेत्रों में रागमाला चित्र खूब बने हैं। संगीत पर आधारित इन चित्रों का निर्माण राग, रागिनी, राग पुत्र, राग पुत्रियों, एवं पुत्रवधू तक ही सीमित रहा बाद में नई राग रागिनिओं में वृद्धि हुई उस पर चित्रण नहीं हुआ। वर्तमान में राग रागिनी वर्गीकरण संभवतया समाप्त हो गया है। आज का संगीत चित्रकारों को प्रेरणा नहीं देता। राग स्वरूपों में देवी प्रतीकों या संरक्षकों में मुख्यतः देवता या राजा होते हैं उनसे संबंधित दैनिक जीवन की घटनाओं का चित्रण होता है। सभी श्रृंगार रस के संयोग और वियोग पक्ष को प्रतिबिंबित करती है। ये पक्ष प्रतीक रूप में चित्रित होते रहे हैं जिनमें श्रृंगार रस का भाव होता है क्योंकि रागमाला के स्वरूप पूज्य एवं दर्शनीय है। अतः अश्लीलता से बचा जाता हैं। पूज्य भावना होने के कारण ही रागमाला चित्रों का निर्माण हुआ जिनमें अभिवादन की मुद्रा और आदर का भाव होता है यदि इन चित्रों में कामुकता का प्रदर्शन होता तो मुद्रा एवं भाव तिरोहित हो जाती और रागमाला चित्र परंपरा किसी और ही नाम से जानी जाती। प्राचीन चित्रकार सीमा में रहकर अव्यक्त को व्यक्त करने की अद्भुत क्षमता रखते थे। संगीत शास्त्री के अनुभव, स्वर, समय, ऋतु, प्रभाव आदि का निर्धारण एवं साहित्यकार द्वारा उस हेतु नायक नायिका रस और वर्ण विषय का निर्धारण का कार्य पूर्ण होने के बाद चित्रकार का कार्य प्रारंभ होता है जो रागमाला चित्रों के रूप में आज हमारे सामने विद्यमान है। यह

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निर्धारण संपूर्ण 36 राग रागिनीओं के बाद राग पुत्र, पुत्री एवं पत्नी आदि सभी के लिए लिखा गया था।

रागमाला का प्राचीनतम चित्र प्रमाण कल्पसूत्र रागमाला है जो 1475 ईसवी में बना है चित्र पांडुलिपि रूप में गुजरात या अपभ्रश शैली में निर्मित है इसके पृष्ठ भाग पर 10 राग चित्र बने हैं। पहले गुजरात तथा राजस्थान अलग–अलग नहीं थे। क्लाज इवलिंग ने तो दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मालवा, मेवाड़ और गुजरात सभी को राजस्थान में ही माना है।[4] अतः इस चित्र को राजस्थानी परंपरा का ही स्वीकार किया जाता है। दूसरा उपलब्ध प्राचीन चित्र भी पांडुलिपि रूप में ही है। कार्लखंडालावाला ने इसे चौरपंचाशिखा रूप में ही माना है जबकि क्लाज इवलिंग ने इसे राजस्थानी चित्र ही किया है। इनका मत है कि चित्र पर संस्कृत भाषा है जो राजस्थान की आधार भाषा रही है। चोरपंचाशिखा के बाद चुनार रागमाला के चित्र आते हैं। चुनार बनारस के पास है लेकिन इससे राजस्थानी परंपरा में इसलिए गिना जाता है कि चुनार बूंदी के रावराजा सुरजन सिंह को रणथंभोर जीतने के उपलक्ष में मुगल शासक अकबर के द्वारा जागीर के रूप में मिली थी। चुनार के इन चित्रों में बहुत परिष्कृत शैली देखी जा सकती है। इस सैट की दो चित्र मायलो सी. बीच ने प्रकाशित किए हैं। चेन्नई चित्रों के रूप में चुनार रागमाला प्राचीनतम उपलब्ध प्रमाण है जिन्हें माइलो सी. बीच ने 1591 ई. मैं निर्मित माना है।[5] राजस्थानी रागमाला चित्रण परंपरा के स्पष्ट प्रमाण 1605 ईसवी में निर्मित चावंड रागमाला के रूप में मिलते हैं। महाराणा प्रताप के दरबारी कलाकार नसीरुद्दीन ने राजधानी चावंड में इन चित्रों का निर्माण किया था। प्राचीनतम उपलब्ध भित्ति चित्रों में रागमाला चित्र दतिया के वीरसिंह देव के महलों में है इसमें 18 चित्र है, जिनका निर्माण काल 1610 ईस्वी है। रागमाला भित्ति चित्रों का अन्य प्रमाण बूंदी के छत्र महल में है जिनकी संख्या 36 है। रागमाला चित्र परंपरा से पूर्व राग रागिनी स्वरूप प्रतीक समय इत्यादि निश्चित होने में बहुत लंबा समय लगा। प्रमुख 4 मतों **कलीनाथ, सोमेश्वर, हनुमत एवं भरत** मत का निर्धारण 12वीं शताब्दी तक हो पाया।

राग रागिनी वर्गीकरण के 4 मत निम्नानुसार है :–

1. सोमेश्वर मत : इसे ब्रह्म मत भी कहते है यह शिव तथा पार्वती द्वारा गेय राग रागिनियों का संकलन है –

1	भैरव राग	भैरवी	गूजरी	रेवा	गुनकली	बंगाली
2	श्री राग	मालवी	गौरी	केदारा	मधुमाघवी	पहाड़ी

3	बसंत राग	देसी	देवगिरी	बरादी	टोडी	ललित
4	पंचम राग	विभास	भूपाली	बुन्धस	मालसी	पटमंजरी
5	नटनारायण राग	कामोदी	कल्याणी	गौरी	नाटिका	सारंग
6	मेघ राग	मल्हार	सोरठ	गन्धारी	कोशिकी	—

2. कल्लिनाथ मत : शेषनाग पर नृत्य करते हुए कृष्णा ने जो राग कहे थे वे इस मत के अंतर्गत आते है—

1	भैरव राग	भैरवी	गूजरी	रेवा	गुनकली	बंगाली
2	श्री राग	मालवी	त्रिवेणी	केदारी	मधुमाघवी	गौरी
3	बसंत राग	देसी	देवगिरी	बरादी	टोडी	ललित
4	पंचम राग	विभास	भोपाली	पटमंजरी	मालसी	बघास
5	नटनारायण राग	कामोदी	कल्याणी	सारंग	नाटिका	नटिका
6	मेघ राग	मल्हारी	सोरठ	सावरी	कोशिकी	गंधारी

3. हनुमत मत : हनुमान ने अपने आराध्य के लिए जो भक्ति गीत गाये थे उनका संकलन इस मतानुसार है —

1	भैरव राग	मध्यमा माधवी	भैरवी	बंगाली	बारादी	सिंधवी
2	मालकोस	टोडी	सम्भावती	गौरी	गुनकली	काकुभी
3	दीपक राग	केदारा	कान्हड़ा	देसी	कामोदी	नट
4	हिंडोला राग	बिलावली	देवशिखा	ललित	पटमंजरी	रामकली
5	श्री राग	बसंत	मालवी	मालश्री	धनाश्री	आसवरी
6	मेघ राग	मल्हार	देसकारी	भूपाली	गूजरी	टंक

4.भरत मत : राम के भाई भरत या नाट्यशाश्त्र के रचयिता भरत के नाम से इस मत को जोड़ा जाता है—

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

1	भैरव राग	मधुमाया	भैरवी	बंगाली	बगडी	सिंधुवी
2	मालकोस	टोडी	सम्भावती	गौडी	गुनकली	काकुम्भ
3	दीपक राग	नटमल्हारी	कांधा	केदारा	देशी	पहाड़ी
4	हिंडोला राग	बिलावली	रामकली	पटमंजरी	देवसहया	ललित
5	श्री राग	बसंत	मालवी	मातश्री	धनाश्री	आसवरी
6	मेघ राग	मल्हारी	देसकारी	भूपाली	गूजरी	

रागमाला चित्रों पर कई बार आलेख या नाम आदि नहीं होते। ऐसी स्थिति में उन्हें इसमें प्रयुक्त विषयों एवं प्रतीकों से पहचाना जाता है। केन्द्रीय संग्रहालय, जयपुर में संग्रहीत राग–माला सैट के अनुसार ये प्रतीक निम्न हैं :–

(1) 1. भैरव राग – नायक नायिका आलिंगन करते हुए, अन्य स्त्री परिचारिकाएं एवं गायक–गायिकाएँ 2. भैरवी रागिनी – नायिका मन्दिर में शिवलिंग की पूजा करते हुए, समय प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व 3. मालश्री रागिनी – नायिका सेज पर बैठी पुष्पहार बनाती हुई, साथ में दासियाँ एवं गायिकाएँ, 4. पटमंजरी रागिनी – उदास या नाराज नायिका फूलों सजी सेज पर बैठी हुई, दूर नायक अन्य नायिका के साथ, 5. ललित रागिनी – सोई नायिका को छोड़कर जाता नायक उसके लिए बाहर तैयार खड़ा घोड़ा, गाय आदि। 6. नट रागिनी – युद्ध का दृश्य ।

(2) 7. श्री राग – राजा, रानी के सामने संगीत प्रस्तुत करता हुआ, सितार लिये गायक एवं ढोलक मंजीरे लिये अन्य साजिन्दे, दासियाँ आदि, 8. कामोद रागिनी – नदी किनारे बनाये मन्दिर में विरहाकुल नायिका पूजा करती हुई. 9. सेतमल्हार रागिनी – कृशकाय साधू बैठा हुआ उसके सामने गायक सितार पर गाता हुआ, आश्रम पर अन्य साधू–चेले आते हुए, 10. आसावरी रागिनी – पानी के पास उठी पहाड़ी के समीप साँपों को पकड़े नायिका, सामने सपेरा बीन बजाता हुआ, चन्दन वृक्ष पर लिपटे सर्प, 11. यहां भी आसाबरी का ही चित्र प्रकाशित कर दिया। वस्तुतः यहां पंचम का चित्र होना चाहिए जो संग्रहालय में नहीं है. 12. केदारा रागिनी – संत के सामने हाथ जोड़कर राजा बैठा हुआ, अन्य साथी, चाकर व थैला तथा राजा का घोड़ा।

(3) 13. राग मालकोष – राजा, रानी चौकी पर बैठे प्रेमक्रीड़ा करते हुए, दासियां एवं नीचे गायक–गायिकाएँ 14. गोडकरी रागिनी – पुष्प–शय्या पर एक हाथ में वीणा लिये बैठी नायिका के सामने मोर एवं पीछे हिरण बैठा हुआ तथा गायिकाएँ खड़ी हुई 15. गोडी रागिनी – मोर के साथ नायिका हाथ में फूलों की छड़ी लिये हुए सामने दो गायिकाएं संगीत प्रस्तुत करती हुई, 16. मनावती रागिनी – नाराज नायिका को मनाता नायक, दासियाँ एवं नीचे नायक का घोड़ा, 17. गुनकली रागिनी – फूलों के दो गमलों की पूजा करते हुए नायिका, पीछे खड़ी दासियाँ एवं नीचे संगीत प्रस्तुत करती हुई नायिकाएं, 18. संभावती रागिनी – ब्रह्मा यज्ञ करते हुए सामने नाविका बैठी हुई, पीछे दासी एवं नीचे गायक–गायिका ।

(4) 19. राग मेघमलार नदी किनारे कृष्ण वीणा लिये नृत्य करते हुए, साथ में गोपियाँ एवं नीचे नृत्य करती गायें, आसमान में काले बादल 20. मालवगोडी रागिनी – नायक एक हाथ में माला लिये हुए नायिका को महल में बिछी सेज की ओर ले जाते हुए 21. काकुम रागिनी – कई मोरों के बीच नायिका दोनों हाथों में पुष्पहार लिये नदी किनारे खड़ी हुई, पास में गायिकाएं 22. गूजरी रागिनी – गाती हुई बैठी नायिका के सामने मोर नृत्य करता हुआ दासियाँ एवं गायिकाएँ 23. बंगाली रागिनी – योगिनी नायिका के सामने बैठा हुआ शेर, दासियां एवं गायिका, 24. विभास रागिनी – सोती हुई नायिका पर कामदेव, पुष्प बाण चलाते हुए, पंखा झलती दासी एवं गायिकाएँ ।

(5) 25.राग दीपक – नायक नायिका हाथ में जलते हुए दीपक लिये हुए अन्य दासियां एवं गायक गायिकाएँ। बून्दी के 1790 ई. के आसपास बने एक चित्र दीपक राग में नायक दीपक लिये हाथी पर बैठा है। उसके पीछे चंवरी बैठी है। सामने भवन के दरवाजे में दो स्त्रियों खड़ी है। 26. कान्हडा रागिनी कृष्ण के सामने हाथ ऊँचे किये हुए एक पुरुष एवं एक बालक, हाथ में हाथी का टूटा हुआ दांत, 27. धनाश्री रागिनी – नायिका, नायक का तख्ती पर चित्र बनाते हुए एवं दासियाँ, नीचे घोड़े पर नायक, चाकर व गायक के साथ 28. बिरारी रागिनी – नायक को हवा करती नायिका अन्य दासियों एवं गायिकाएँ 29. रागिनी बसंत – कृष्ण गोपियों के साथ नृत्य करते हुए उनके हाथ में एक छोटा फूलों का गमला, साफ आसमान। 30. देसवरारी रागिनी – अंगड़ाई लेती नायिका सामने एवं पीछे दासियों एवं नीचे गायिकाएं।

(6) 31. हिण्डोल राग – राधाकृष्ण झूले में झूलते हुए, सामने नाचती नृत्यांगना, दासियाँ, गायक एवं गायें, झूले पर मोर 32. मधुमाधवी रागिनी छत से आते हुए मोर को दाना खिलाते हुए नायिका अन्य दासियाँ आदि । 33. देव–गंधारी रागिनी – साधू के सामने गायिकाएँ, पीछे शिष्य एवं नीचे नदी किनारे मेंढा। 34. टोडी रागिनी हिरणों के बीच बीणा लिये नायिका एवं

दूर दो स्त्रियाँ 35. देषख रागिनी – नट नटनी अभ्यास करते हुए। 36. बिलाबल रागिनी – नायिका दर्पण देखती हुई, श्रृंगार करते हुए अन्य सेविकाएँ एवं गायिकाएँ।[6]

पंचम रागिनी जिसका यहाँ उल्लेख नहीं है. उसके स्थान पर अठारहवीं शताब्दी में रणथम्भोर में चित्रित पंचम रागिनी के चित्र में युगल प्रेमालिंगन कर रहे हैं तथा एक दासी गायकों को पुरस्कार रूप में सिक्के दे रही है। रागमाला चित्रों में सामान्यतः निम्न विषय देखने को मिलते हैं :–

नायक पशु के साथ, हाथी, घोड़े या ऊँट आदि, नायक या कृष्ण नृत्य करते हुए, नायक, नायिका का पीछा करते, उसकी ओर जाते हुए, नायक तलवार या फूलों की छड़ी लिये खड़ा हुधा, नायक बैठा हुआ, नायक संगीतकारों के साथ, नायक नायिका खड़े हुए, नायक नायिका बैठे हुए, नायक नायिका प्रेमालिंगन करते हुए, नायक नायिका में कोई एक सोते हुए एवं खड़े हुए, विरहिणी नायिका, नायिका सखियों, दासियों के साथ, नायिका सितार या वीणा लिये हुए, नायिका वीणा एवं मोर या मोरों के साथ, नायिका अन्य पशुओं यथा हिरण, खरगोश शेर आदि के साथ, नायिका फूलों को छड़ी, गमले आदि के साथ, नायिका पूजा करते हुए, अकेला साधू, साधू, शिष्य या शिष्या के साथ, साधू यात्रियों के साथ, युद्ध या नटविद्या के दृश्य पादि ।

ये रूप, प्रतीक, समय आदि कवि की कविता एवं संगीतकार द्वारा निर्धारित क्रम या मानक के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। रागमाला बारहमासा नायिका भेद आदि के मानक निर्धारण का कार्य कवियों या विषय के विद्वानों ने किया तथा चित्रकारों ने मात्र उनके आधार पर चित्र बनाने का कार्य किया। केशव ने बारहमासा ऋतुओं के गीतों का प्रारंभ किया। ये लौकिक गीत बड़े प्रचलित हुए। ब्रजभाषा–काव्य के बारहमासा विषयों ने देशी चित्रकारों को अत्यधिक आकर्षित किया। उन्होंने प्रेम भावना को नवीन ढ़ग से व्यक्त करने का माध्यम पा लिया। संगीत की प्रगति के साथ–साथ रागमाला के चित्र बनाए जाने लगे।[7] यह विलक्षण बात है कि कलाकारों ने संगीत जैसी अदृश्य–कला के सिद्धान्तों को चित्रकला जैसी दृश्य–कला द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया। रागों के मूर्तिकरण में महाराणा कुंभा के संगीतराज ग्रंथ का योगदान विशेष उल्लेखनीय रहा।[8] मेवाड़ स्कूल में सर्वाधिक चर्चित नसीरदीन द्वारा चावंड में चित्रित रागमाला का सैट चित्रकला के इतिहास में दीप–स्तम्भ की तरह है। महाराणा अमरसिंह के समय में 1605 ई. में चित्रित इस रागमाला के अनेक चित्र यत्र–तत्र उपलब्ध है, जिनमें मारू रागिनी तिथियुक्त 1605 ई. का महत्वपूर्ण लघुचित्र है।[9] 1628 ई. मे चित्रित रागमाला के अनेक चित्र भारत के संग्रहालयों में बिखरें पड़े, जिनमें साहिबदीन की जहाँगीर कालीन शैली का अन्यतम उदाहरण देखने को मिलता है। मारवाड़ के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जन जीवन से प्रभावित कुँवर संग्रामसिंह संग्रहालय में 'रागमाला' का एक तिथियुक्त ऐतिहासिक महत्व का सैट उपलब्ध है। सन् 1623 में कलाकार वीरजी द्वारा पाली के प्रसिद्ध वीर पुरूष विठ्ठलदास चाँपावत के लिए चित्रित किया गया था।

निष्कर्ष :–

बीसवीं शताब्दी में सभी कलाएं एक दूसरे से स्वतंत्र होती चली गई। साहित्य संगीत और कला तीनों समसामयिक समय में एक दूसरे से स्वतंत्र है। रागमाला चित्रों का निर्माण अब बंद हो गया। जो रागमाला चित्रण करते हैं उनके सामने प्रतीक निश्चित नहीं है। व्यक्ति स्वातंत्र्य की भावना और संगीत एवं कला –क्षेत्र का अलगाव रागमाला चित्र निर्माण की प्रमुख बाधा है जो निरंतर बढ़ती रहेगी। रागमाला चित्रों की अच्छी स्थिति नहीं है अब न तो अच्छे रंग है न हीं इस युग में मेहनती कलाकार न ही साधना करने योग्य संयम है और ना ही संगीतकारों एवं कवियों के लिए चित्रकार आवश्यक रह गए हैं। पुनः काम आरंभ करने के लिए साधना, श्रम व धन की आवश्यकता है इसके लिए कोई किसी कलाकार को संरक्षण दे तभी वह निश्ंिचत होकर सृजन प्रारंभ करें और अपने कार्य में एक सम्मानजनक उपलब्धि हासिल करें।

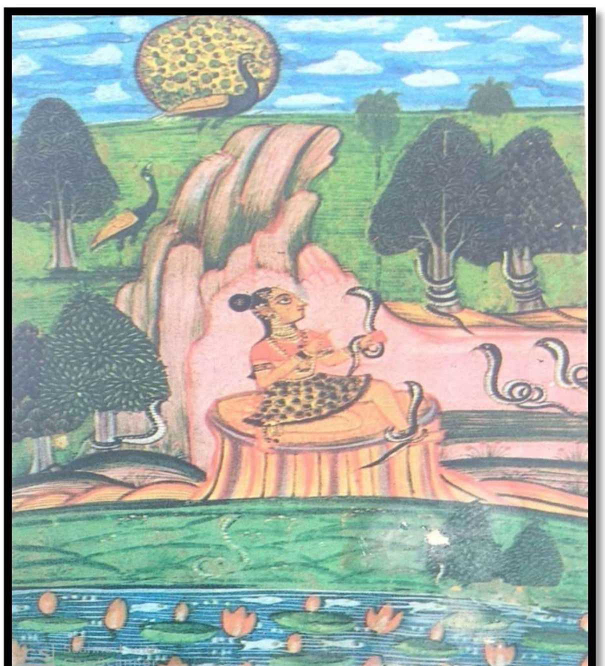

आसावरी रागिनीः रागमाला पेंटिंग, मारवाड

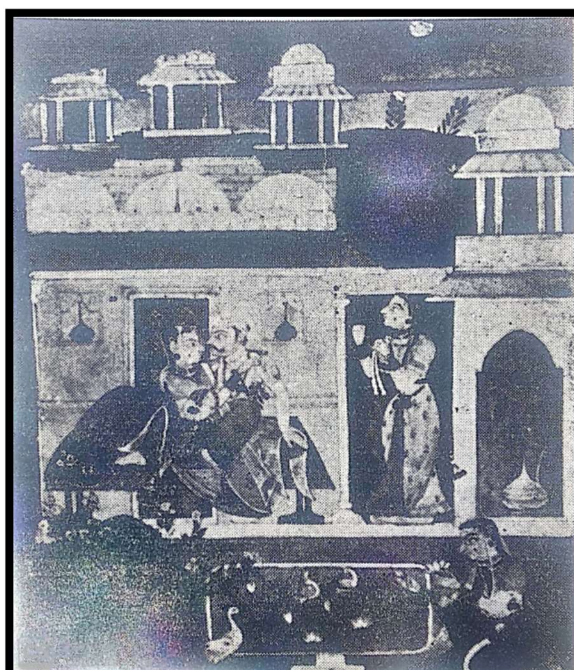

बरारी रागिनीः रागमाला पेंटिंग, ईसरदा, 1600 ई

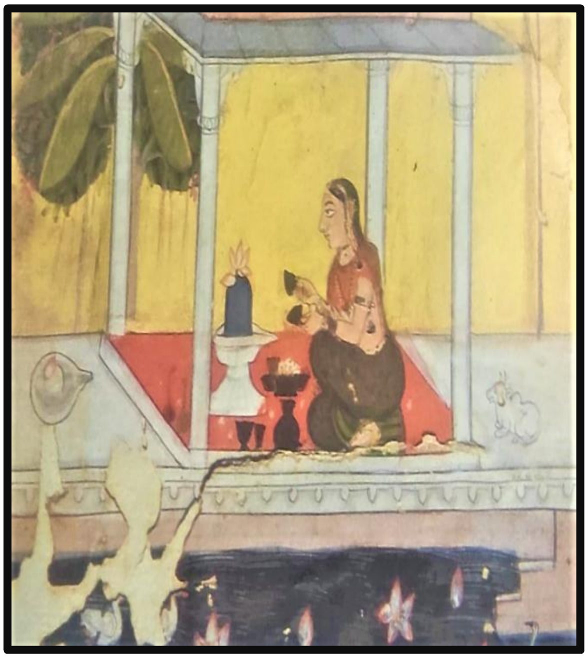

भैरव रागिनीः उदयपुरशैली, सन् 1660 (कुमार संग्रामसिंह संग्रहालय, जयपुर)

राग मेघः पाली शैली, सन् 1623, चित्रकार वीरजी (कुमार संग्रामसिंह संग्रहालय, जयपुर)

संदर्भ ग्रन्थ :–

[1] रामावतार, वीर, राग रागिनी सिस्टम, पृष्ठ संख्या 9
[2] वही पृष्ठ संख्या 9
[3] डॉ. शरत्चंद्र श्रीधर परांजये, संगीतबौद्ध, पृष्ठ संख्या 55
[4] क्लॉज इबलिंग, रागमाला पेंटिंग, पृष्ठ संख्या 34
[5] माइलो सी.बीच, राजपूत पेंटिंग एंड बूंदी एंड कोटा, चित्र संख्या 1 व 2
[6] शर्मा, महेंद्र कुमार, राजस्थानी रागमाला चित्रण परंपरा, पब्लिकेशन स्कीम, जयपर, पृष्ठ संख्या 73
[7] डॉ.रामनाथ, मध्यकालीन भारतीय कलाएँ एवं उनका विकास, राजस्थानी हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1973, पृष्ठ संख्या 9
[8] डॉ. जयसिंह नीरज, राजस्थानी चित्रकला, राजस्थानी हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1994,पृष्ठ संख्या 26.
[9] मरू राग ।।42।। संवत् 1685 वर्ष आसोवद राजा श्री जगतसिंह उदैपुर मद्यै लिखतं। चितारा साहीबदीन।